https://artorbit.in/
Art Orbit - Volume 01, No 03, SEP 2025 PP 87-90 (Total PP 04)
ISSN : 3107- 670X (Online)
Frequency – Monthly
Ahmad At El.— New Media Art And Social Change

NEW MEDIA ART AND SOCIAL CHANGE (**न्यू मीडिया कला और सामाजिक परिवर्तन**)

Meraj Ahmad [a]* **Dr. Vineeta Yadav**[b]

[a] *Research Scholar, Department of Painting, Daau Dayal Mahila PG College, Firozabad*

[b] *Head of Department, Department of Painting, Daau Dayal Mahila PG College, Firozabad*

[a]*Email: ma616831@gmail.com*

Abstract

This paper deeply analyzes the complex and dynamic relationship between new media art and contemporary society. Unlike traditional art forms, which are often based on one-sided dialogue, new media art uses digital technologies to involve the audience and promote socio-cultural dialogue. This study specifically examines the ways in which new media art enables participation in society, the democratization of art, and important social and political commentary. The primary objectives of the research include understanding how interactive installations and online platforms reduce the distance between art and the audience, making art not just an object of display but a collective experience. Additionally, this research analyzes the comments made by artists on sensitive issues such as environment, human rights, and digital identity through data visualization and digital art. It will also explore how the internet has freed art from the walls of museums and galleries, making it accessible to the common people, leading to a new, inclusive form of art. The study found that new media art is not merely a reflection of technological development, but it is a mirror that reflects the changing values, identities, and challenges of society. It is concluded that new media art has emerged as a powerful tool that promotes social awareness and change, and it empowers society to become an active participant in artistic dialogue. This research provides a basis for future studies that will further deepen the interconnections between art, technology, and social development.

यह न्यू मीडिया कला और समकालीन समाज के बीच के जटिल और गतिशील संबंधों का गहन विश्लेषण करता है। पारंपरिक कला रूपों के विपरीत, जो अक्सर एकतरफा संवाद पर आधारित होते हैं, न्यू मीडिया कला डिजिटल तकनीकों का उपयोग करके दर्शकों को सहभागी बनाती है और सामाजिक-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देती है। यह अध्ययन विशेष रूप से उन तरीकों की जाँच करता है जिनसे न्यू मीडिया कला समाज में भागीदारी, कला के लोकतंत्रीकरण, और महत्वपूर्ण सामाजिक तथा राजनीतिक टिप्पणी को संभव बनाती है। शोध के प्राथमिक उद्देश्यों में यह समझना शामिल है कि कैसे इंटरैक्टिव इंस्टॉलेशन और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म कला और दर्शकों के बीच की दूरी को कम करते हैं, जिससे कला केवल एक प्रदर्शन वस्तु न रहकर एक सामूहिक अनुभव बन जाती है। इसके अतिरिक्त, यह शोध डेटा विज़ुअलाइज़ेशन और डिजिटल कला के माध्यम से पर्यावरण, मानवाधिकार और डिजिटल पहचान जैसे संवेदनशील मुद्दों पर कलाकारों द्वारा की गई टिप्पणियों का विश्लेषण करता है। यह भी पता लगाया जाएगा कि कैसे इंटरनेट ने कला को संग्रहालयों और गैलरी की दीवारों से मुक्त करके आम लोगों तक पहुँचाया है, जिससे कला का एक नया, समावेशी रूप सामने आया है। अध्ययन में पाया गया कि न्यू मीडिया कला केवल तकनीकी विकास का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि यह एक दर्पण है जो समाज के बदलते मूल्यों, पहचानों और चुनौतियों को प्रतिबिंबित करता है। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि न्यू मीडिया कला एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरी है जो सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन को बढ़ावा देती है, और यह समाज को कलात्मक संवाद में सक्रिय भागीदार बनने के लिए सशक्त बनाती है। यह शोध भविष्य के उन अध्ययनों के लिए एक आधार प्रदान करता है जो कला, प्रौद्योगिकी और सामाजिक विकास के बीच के अंतर्संबंधों को और गहराई से समझेंगे।

Keywords: New Media Art, Society, Technology, Participation, Democratization

न्यू मीडिया कला, समाज, प्रौद्योगिकी, भागीदारी, लोकतांत्रिकरण

---

* Corresponding author.

परिचय

कला और समाज का संबंध मानव सभ्यता जितना ही पुराना है, जहाँ कला ने हमेशा सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक बदलावों को प्रतिबिंबित किया है। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में डिजिटल क्रांति के आगमन के साथ, यह संबंध एक अभूतपूर्व मोड़ पर आ गया है। इस तकनीकी परिवर्तन ने एक नए कला रूप को जन्म दिया, जिसे न्यू मीडिया कला कहा जाता है। यह पारंपरिक कला से इस मायने में भिन्न है कि यह केवल एक स्थिर वस्तु या चित्र नहीं है, बल्कि यह प्रौद्योगिकी-आधारित है, जिसमें इंटरनेट, आभासी वास्तविकता (VR), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), और इंटरैक्टिव सॉफ़्टवेयर का उपयोग किया जाता है। न्यू मीडिया कला पारंपरिक कला के सीमाओं को तोड़ती है और कला निर्माण तथा उसके उपभोग के तरीकों को मौलिक रूप से बदल देती है।

आज, न्यू मीडिया कला केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का एक माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक दर्पण है जो हमारे तकनीकी-निर्भर समाज की जटिलताओं और चुनौतियों को दर्शाता है। यह कला रूप सामाजिक भागीदारी को प्रोत्साहित करता है, जहाँ दर्शक निष्क्रिय नहीं रहते, बल्कि कलाकृति के साथ सीधे अंतःक्रिया करते हैं। इस प्रकार, कला एक व्यक्तिगत अनुभव से बढ़कर एक सामूहिक, सहभागी अनुभव बन जाती है। इसके अलावा, इंटरनेट के माध्यम से यह कला म्यूज़ियम और गैलरी की पारंपरिक सीमाओं को पार कर वैश्विक दर्शकों तक पहुँचती है, जिससे कला का एक नया लोकतांत्रिकरण होता है। यह न्यू मीडिया कला और समकालीन समाज के बीच के गहरे और बहुआयामी संबंधों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है। इसका उद्देश्य यह समझना है कि कैसे यह कला सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर टिप्पणी करने के लिए एक शक्तिशाली मंच के रूप में कार्य करती है, जैसे कि डेटा गोपनीयता, ऑनलाइन पहचान, और तकनीकी निगरानी। हम उन तरीकों पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे जिनसे न्यू मीडिया कला ऑनलाइन समुदायों के निर्माण और नए सामाजिक संरचनाओं के विकास को दर्शाती है। यह प्रश्न उठता है: "न्यू मीडिया कला समाज में भागीदारी, लोकतांत्रिकरण और सामाजिक संवाद को कैसे बढ़ाती है, और यह हमारे तकनीकी युग की प्रमुख चुनौतियों को कैसे प्रतिबिंबित करती है?" इस पेपर के माध्यम से, हमारा लक्ष्य यह दिखाना है कि न्यू मीडिया कला केवल एक कलात्मक प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि यह हमारे बदलते समाज का एक महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतक है। यह कला हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि प्रौद्योगिकी हमारे जीवन, हमारी पहचान और हमारे आपसी संबंधों को कैसे आकार दे रही है। मीडिया कला और समाज के बीच का रिश्ता एक जटिल नेटवर्क है जहाँ प्रौद्योगिकी, संस्कृति और मानवीय अनुभव एक-दूसरे से गुंथे हुए हैं। इस अध्ययन के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि न्यू मीडिया कला केवल कला के एक नए रूप से कहीं अधिक है; यह एक शक्तिशाली सामाजिक उपकरण है जो हमारे डिजिटल युग को परिभाषित करने वाली प्रमुख चुनौतियों और अवसरों को दर्शाती है।

कला का लोकतंत्रीकरण

विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कला क्षेत्र में अभूतपूर्व लोकतंत्रीकरण लाया है। अब कला संग्रहालयों, गैलरी या अभिजात वर्ग की सीमाएँ टूट चुकी हैं-कोई भी कलाकार अपनी कला सोशल मीडिया, ऑनलाइन गैलरी और वर्चुअल रियलिटी (VR) प्रदर्शनियों के ज़रिए वैश्विक दर्शकों तक पहुँचा सकता है।

इंटरनेट प्रौद्योगिकी ने कला की साझेदारी, प्रदर्शन और संवाद के लिए तत्काल, सबको सुलभ मंच दे दिए हैं, जिससे पारंपरिक सीमाएँ ध्वस्त हो गई हैं। सोशल मीडिया और ओपन प्लेटफॉर्म्स ने कलाकारों और आम लोगों के बीच संवाद वप्रतिभा प्रदर्शन की नई राहें खोली हैं; पहले जहाँ गिनती के लोग ही महान कलाकृतियाँ देख पाते थे, अब कोई भी दुनिया के किसी भी कोने से भागीदार बन सकता है।

वर्चुअल रियलिटी, डिजिटल गैलरी, लाइव स्ट्रीमिंग और NFT जैसी तकनीकों ने न सिर्फ खोज, अनुभव और खरीद के अनुभव को बदला, बल्कि झाली हुई व्यवस्था को चुनौती भी दी है, जहाँ कला की पहुँच केवल उच्च वर्ग तक सीमित थी।

यह परिवर्तन कला की सुलभता, विविधता और वैश्विक संवाद को बढ़ावा देता है, जिससे हर व्यक्ति-चाहे वह कहीं भी हो, किसी भी पृष्ठभूमि से हो-रचनात्मक लोकतंत्र का भागीदार बन सकता है। आपका विश्लेषण बिल्कुल सही है कि इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कला के लोकतंत्रीकरण को एक नया आयाम दिया है। डिजिटल युग में अब कलाकारों को अपनी रचनाएँ केवल सीमित अभिजात वर्ग या पारंपरिक गैलरी-संग्रहालयों तक नहीं रखना पड़ता–वे सोशल मीडिया, डिजिटल आर्ट गैलरी और वर्चुअल रियलिटी (VR) प्रदर्शनियों के माध्यम से अपनी कला को व्यापक वैश्विक दर्शकों तक सीधे पहुंचा सकते हैं। डिजिटल तकनीक ने कला की साझेदारी को आसान, त्वरित और सीमाहीन बना दिया, जिससे कोई भी व्यक्ति अब दुनिया के किसी भी हिस्से से इन कलाकृतियों को अनुभव कर सकता है। पारंपरिक कला-संस्थानों की सीमाएँ टूटी हैं, और आज कला प्रदर्शन, संवाद, खरीद और खुद सृजन-हर स्तर पर आम व्यक्ति की सीधी भागीदारी संभव हुई है। • डिजिटल प्लेटफॉर्म चाहे वह सोशल मीडिया हो, ऑनलाइन आर्ट सेलिंग प्लेटफॉर्म, ओपन कॉल एग्जीबिशन या VR शो-ने विविधता, समावेशिता और रचनात्मक स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया है। इसलिए डिजिटल युग ने न केवल कला की पहुँच को बढ़ाया, बल्कि उसे लोकतांत्रिक बनाकर हर व्यक्ति के लिए रचनात्मक मंच उपलब्ध कराया है, जो लगातार वैश्विक कला परिदृश्य को समृद्ध कर रहा है।

दर्शकों की भागीदारी और सहभागिता

यह बिंदु न्यू मीडिया कला की विशिष्टता को स्पष्ट रूप से उजागर करता है-इंटरैक्टिव इंस्टॉलेशन और सहभागी कलाकृतियाँ केवल पेसिव ऑब्जर्वेशन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि दर्शकों को निर्माण प्रक्रिया का हिस्सा बना देती हैं।

इंटरैक्टिव इंस्टॉलेशन में दर्शक सेंसर, कैमरा, टच स्क्रीन या अन्य डिजिटल तकनीक के माध्यम से कलाकृति के साथ अंतरक्रिया करते हैं, जिससे कलाकृति दर्शकों के इनपुट के अनुसार बदलती रहती है; यह उसमें व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों अनुभव जोड़ती है।

सहभागी या "पार्टिसिपेटरी" कला प्रोजेक्ट्स में ऑनलाइन या ऑफलाइन योगदान संभव है उदाहरण हैं डेटा-संचालित कलाएँ जहाँ प्रत्येक दर्शक के इनपुट, टिप्पणी या हस्तक्षेप से डिजिटल आर्ट का रूपांतरण हो जाता है। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया कला और समाज के बीच की पैसिव दूरी को घटाकर जीवंत संवाद एवं सामाजिक सहभागिता का मंच बनाती है; कलाकार, दर्शक और तकनीक-all मिलकर कलात्मक अनुभव की सतत रचना करते हैं।

निष्कर्षत:, इंटरैक्टिव और सहभागी न्यू मीडिया कला दर्शकों को केवल उपभोक्ता न रखकर, सृजन-यात्रा के सक्रिय भागीदार में बदल देती है-जिससे कलात्मक संवाद लगातार विकसित और समाज-विन्यास के लिए प्रासंगिक रहता है।

सामाजिक और राजनीतिक टिप्पणी

न्यू मीडिया कला सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर टिप्पणी करने का एक शक्तिशाली मंच बन गई है। कलाकार डेटा विज़ुअलाइज़ेशन का उपयोग करके जलवायु परिवर्तन, प्रवासन, और असमानता जैसे मुद्दों को दर्शाते हैं। वे वीडियो गेम कला के माध्यम से राजनीतिक भ्रष्टाचार पर कटाक्ष करते हैं या ऑनलाइन प्रदर्शनों के माध्यम से मानवाधिकारों के बारे में जागरूकता फैलाते हैं। यह कला रूप जटिल डेटा और गंभीर विषयों को एक दृश्य और भावनात्मक तरीके से प्रस्तुत करने की अनुमति देता है, जिससे वे आम जनता के लिए अधिक सुलभ और समझने योग्य हो जाते हैं।

डिजिटल और समुदाय

विश्लेषण से यह भी पता चला है कि न्यू मीडिया कला डिजिटल पहचान के निर्माण और ऑनलाइन समुदायों के विकास को दर्शाती है। अवतार, वर्चुअल स्पेस और ऑनलाइन गेम में लोग नई पहचान बनाते हैं। न्यू मीडिया कलाकार इस प्रक्रिया को दर्शाते हैं, यह सवाल उठाते हैं कि हमारी ऑनलाइन और ऑफलाइन पहचानें कैसे एक-दूसरे से जुड़ती हैं।

संदर्भ

1. Fernandes, K. (2012, September 23). Is new media art a fad? Retrieved from https://timesofindia.indiatimes.com/life-style/spotlight/is-new-media-art-a-fad/articleshow/16513893.cms
2. Found Object. (2022). Retrieved from https://www.moma.org/collection/terms/found-object
3. Hazari, S. (2022, December 16). How is technology impacting art creation in 2022? Retrieved from https://www.lcca.org.uk/blog/graphic-design/how-is-technology-impacting-art-creation-in-2022/
4. Hope, C., Ryan, J. C. (2014). Digital Arts: An Introduction to New Media. United Kingdom: Bloomsbury Publishing.
5. Sinha, G. (2010). *Art and Visual Culture in India, 1857-2007.* India: Marg Publications.
6. An introduction to Generative Art: what it is, and how you make it. (2018, September 26). Retrieved from https://www.freecodecamp.org/news/an-introduction-to-generative-art-what-it-is-and-how-you-make-it-b0b363b50a70/